रिकॉर्डः– बचपन के दिन भुला ना..... "ॐ" पिताश्री 24/1/1965

ओम् शान्ति। यह बेहद के बाप ने बच्चों को शिक्षा दी अथवा सावधान किया। जबकि राम की संतान बने हो तो इस बचपन अथवा ईश्वरीय बचपन को फिर भुला ना देना। ऐसे ना हो कि राम के बचपन से हट रावण की तरफ चले जाओ। फिर तो बहुत–2 पछताना पड़ेगा। यह भी समझाया है कि अगर महान ते महान मूर्ख देखना हो तो यहाँ मधुबन में। पढ़ाई को छोड़ देते हैं अथवा हाथ छोड़ देते हैं तो समझ सकते हैं उनकी क्या गति होगी। यहाँ के महारथी हैं गज। उनको ग्राह रूपी माया खा लेती है। यह बाप सन्मुख बैठ समझाते हैं– मीठे–2, सिकीलधे बच्चे, माया बड़ी दुस्तर है। ऐसा ना हो कि कहीं बेहद के बाप का हाथ छोड़ दो। यह परमपिता परे ते परे रहने वाला पिता, पतित–पावन। ऐसे बाप का कब हाथ ना छोड़ना, नहीं तो बहुत रोना पड़ेगा। बहुत अच्छे–2 बच्चे, जिनको बाबा बड़े–2 टाइटल देते हैं, वह भी हाथ छोड़ देते हैं। बाबा कोई–2 को जास्ती प्यार भी करते हैं कि कहाँ गिर ना पड़े। गीत भी है ना, ऐसा ना हो कि माया तुमको (धस...) लेवे। फिर बहुत पछताना पड़ेगा। वास्तव में सच्ची-2 युद्ध तुम्हारी है। वो तो है हिन्दुस्तान–पाकिस्तान की लड़ाई। तुम्हारी फिर और बात है। तुम हो पाकिस्तान और वो है नापाकिस्तान। दोनों भाई–2 तुम हो। अभी तुम नापाकिस्तान से पाकिस्तान बने हो। नापाकिस्तान पतित है ना। तो पतित स्थान को तुम पावन स्थान बनाते हो। पाकिस्तान तो यहाँ है नहीं। सारी दुनिया नापाकिस्तान है। नाम करके पाकिस्तान रखा है; परन्तु है नहीं। तो सच्ची–2 लड़ाई तुम पाकिस्तान की नापाकिस्तान से है। पावन तो हैं ही देवी–देवताएँ। तुम नापाक, पतित भारत को पावन भारत बना रहे हो पाक बनाने। हिन्दुस्तान अब नापाकिस्तान है। सतयुग पाकिस्तान बनता है। जो नापाक को पाक बनाने मेहनत करते हैं वो ही पाकिस्तान अर्थात् स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तुम भारत की सेवा करते हो ना। हाँ, विघ्नों को भी हटाना होता है। इसमें हार्टफेल अथवा सुस्त नहीं होना है। कोई भी हालत में सर्विस ज़रूर करनी है पतितों को पावन बनाने की। तुम्हारा धन्धा ही यह है। और कोई बातों से तुम्हारा ताल्लुक नहीं है। देखना है कि हमने कितने नापाक को पाक बनाया। यह भारत स्वर्ग था ना अर्थात् पावन स्थान अर्थात दुनिया थी। पाकिस्तान, नापाकिस्तान का किसको भी ज्ञान नहीं है। पाकिस्तान है ही सतयुग, नई दुनिया। फिर पुरानी दुनिया होने से नापाक, पतित, तमोप्रधान बन पड़ती है। तो रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को सन्मुख समझाते हैं। तुम्हारी बुद्धि में है बरोबर हम पवित्र स्थान स्थापन कर रहे हैं। पवित्र स्थान भारत था। अभी अपवित्र स्थान बना है। मकान नया है फिर पुराना ज़रूर बनेगा। जो न्यू है सो ओल्ड बनता है। यह समझ नई दुनिया में नहीं रहती। अभी तुम बच्चों को समझाया जाता है। भल लाखों वर्ष आयु कहते हैं तो भी आखरीन पुराना तो होना है ना। पुराना नाम ही कलियुग का है। नवयुग और पुराना युग। तुम जानते हो, अभी नवयुग अर्थात सतयुग आ रहा है। हम फिर से यह बाप से नॉलेज ले रहे हैं। पवित्र बनो स्वराज्य पाने लिए। यह बुद्धि में है ना। स्टूडेंट कब टीचर को वा पढ़ाई को भूल सकते हैं क्या? कब नहीं। तुम भी स्टूडेंट हो ना। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए तुम्हारी बुद्धि में है कि हम पढ़ रहे हैं। इस पढ़ाई में टाइम बहुत लगता है। बीच में कोई गिर पड़ते हैं, कोई हराय लेते हैं। मुख से कहते अथवा लिखते भी हैं शिवबाबा **c/o** ब्रह्मा। बाप को बड़े प्रेम से पत्र लिखती हैं। हम जीव की आत्मा प०पि०प० को पत्र लिखती हैं। वहाँ पुकार रहती है– हे परमात्मा! रक्षा करो, शान्ति दो। सिवाय बाप के कोई शान्ति दे भी ना सके। बाप को आना ही है। भक्तों का रक्षक भी गाया हुआ है। कहते हैं, जीवनमुक्ति दो वा शान्ति दो। हमको मुक्त करो। हम जीते जी मुक्त होवें। वह तो सतयुग में ही होते हैं। यहाँ तो जीवनबंध हैं। इन बातों को अभी तुम बच्चे समझते हो। बाप समझा रहे हैं। और कोई की बुद्धि में यह ड्रामा का राज़ नहीं है। तीनों कालों, आदि–मध्य–अंत को कोई नहीं जानते हैं। तुम सब कुछ जानते हो; परन्तु हो कितने साधारण और गुप्त। वह बाहर (में) जाकर जिस्मानी ड्रिल आदि करते हैं, सीखते हैं। तुम्हारी ड्रिल है ही रूहानी। कोई को पता नहीं है कि यह कोई वारिअर्स हैं

लड़ाने–करने वाले। महाभारत की लड़ाई दिखाई है ना। वो कैसे हुई? महाभारत की लड़ाई भगवान ने कराई, ऐसे कहते हैं। अब भगवान हिंसक युद्ध कैसे करावेंगे! भगवान तो युद्ध सिखलाते हैं माया पर जीत पाने की। समझाते हैं, तुम तो 16 कला सम्पूर्ण थे। तुम मूलवतन से नंगे आए, फिर यहाँ चोला धारण कर पहले सतयुग में राज्य किया। स्मृति में आता है ना। कहते हैं ना, हाँ बाबा, अब हमको स्मृति आई है बरोबर हम दैवी राज्य के मालिक थे, फिर हराय लिया। अब स्मृति आई है। अब हम युद्ध के मैदान में खड़े हैं। माया पर जीत ज़रूर पहनेंगे। बरोबर काम चिक्षा पर चढ़ने से मनुष्य का काला मुँह हो जाता है। काला अक्षर थोड़ा कड़ा है; इसलिए सांवरा कहा जाता है। कृष्ण को सांवरा दिखाते हैं ना। कृष्ण अथवा नारायण आदि को सांवरा रंग देते हैं। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं। मनुष्य तो काले होते हैं, जैसे अफरिकन काले हैं; परन्तु यह रॉयल अक्षर है गोरा और सांवरा। आइरन एज को सांवरा ही कहेंगे। लौकिक बाप भी कहते हैं ना, तुमने काला मुँह करके कुल के(को) कलंक लगाया है। बेहद का बाप भी कहते हैं, तुम आसुरी मत पर चल दैवी कुल को कलंकित किया है, इसलिए तुम सांवरे बन गए हो। पूरा सांवरा बनने में आधा कल्प लगता है। गौरा बनने (में) एक सेकण्ड लगता है। बच्चों को ड्रामा के आदि–मध्य–अंत की अब स्मृति आई है। और धर्म वालों को स्मृति नहीं आ सकती। विस्मृति भी तुम बच्चों को हुई है, फिर स्मृति भी तुमको आती है। तुम दैवी स्वराज्य के मालिक थे। राजाएँ कितने ढेर थे। इसलिए नाम ही राजस्थान रखा है। अभी तो यह पंचायती राज्य है। अभी तुम पुरुषार्थ कर इम्परर अथवा इम्परर्स ऑफ वर्ल्ड बन रहे हो। वहाँ तो महाराजा–महारानी ही कहते हैं, और कोई अक्षर है नहीं। तुम सारे वर्ल्ड के मालिक बनते हो। अभी पंचायती राज्य है। तुम समझते हो, ड्रामा प्लेन अनुसार ऐसे ही होना था। स्वर्ग फिर चक्कर लगाकर नर्क बनता है। अभी तुम नापाकिस्तान से पाकिस्तान में जाकर राज्य करने पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम्हारी पढ़ाई तो बड़ी सिम्पल है। अल्फ और बे को याद करना है। बस। अक्षर ही दो हैं। बाप खुद कहते हैं– बच्चे, माम् एकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। राजाई को याद करो तो राजाई ज़रूर मिलेगी। यह याद करते रहो। मैं भैंस हूँ, भैंस हूँ, वो बात नहीं है। तुम आत्मा कहती हो, हम विष्णु बनेंगे। कैसे बनेंगे, वो भी बतलाते हैं। मुझे याद करो और विष्णु पुरी अथवा राजधानी को याद करो। प्रवृत्तिमार्ग होने कारण विष्णु का नाम लिया जाता है– विष्णु की राजधानी। वहाँ भी ल०ना० के तख्त पिछाड़ी विष्णु का चित्र निशानी रहती है। चित्रों में भी ऐसे बनाते हैं। बाबा ने राज़ समझाया है, ऐसे–2 वहाँ की रसम–रिवाज़ है। ल०ना० जब राज्य करते हैं तो विष्णु का चित्र तख्त पिछाड़ी रहता है। फिर वो ही ल०ना० चक्कर लगाय आकर ब्रह्मा–सरस्वती वा जगतपिता–जगदम्बा बनते हैं। ब्रह्मा से ही सारी सृष्टि की स्थापना होती है, इसलिए ग्रेट–2 ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा को कहते हैं। शिव को तो सिर्फ फादर ही कहेंगे। सभी आत्माएँ ब्रदर्स हैं। ग्रेट–2 ग्रैन्ड फादर मनुष्य बनता है, इसलिए ब्रह्मा को ही कहा जाता है। परमात्मा के तो तुम सभी बच्चे हो ही। सतयुग में तुम आत्म–अभिमानी हो। इस समय देह–अभिमानी हो। अब फिर देह–अभिमान को निकाल आत्म–अभिमानी बनना है। आत्म–अभिमानी परमात्मा बाप ही बनाते हैं। यहाँ तुम बच्चों को डबल नॉलेज है। आत्म–अभिमानी भी बनते हो, फिर बाप को भी याद करते हो; क्योंकि उनसे वर्सा लेना है। देवताओं ने तो पास्ट जन्म में पुरुषार्थ कर वर्सा पा लिया, फिर याद करने की दरकार ही नहीं। तो बच्चों को नई–2 प्वाइंट्स बुद्धि में धारण करनी हैं। युक्तियाँ तो बहुत मिलती रहती हैं। पहले–2 बुद्धि में यह बात बिठाओ कि ऊँच ते ऊँच कौन सा स्थान है– निर्वाणधाम। हम आत्माएँ निर्वाणधाम की निवासी हैं। प०पि०प० है ऊँच ते ऊँच स्थान। ऊँच ते ऊँच नाम है। ऊँच ते ऊँच उनकी महिमा है। वो आया भी भारत में है, तब तो यहाँ यादगार बना है ना। जिसका कोई नाम–रूप ही नहीं तो वो चीज़

कहाँ से आवेगी, जो उनको पूजेंगे! तो यह भी भूल है ना। परमात्मा को नाम–रूप, देश–काल से न्यारा कहना, यह महान अज्ञान हो गया। शिवरात्रि भी भारत में ही मनाते हैं। भारत ही प्राचीन सतयुग था, अब नहीं है। ज़रूर बाप ने ही सतयुग की स्थापना की होगी। फिर दुख कौन देता है, कब से शुरू होता है– यह कोई नहीं जानते। बाप बैठ समझाते हैं, अब 21 पीढ़ी लिए तुमको बेहद का वर्सा देने आया हूँ। तुमने कल्प–2 यह पुरुषार्थ किया है। बेहद सुख का वर्सा बेहद के बाप से लिया है। जबकि अभी यह अन्तिम जन्म है तो क्यों ना पवित्र बन भविष्य के लिए पूरा वर्सा लेना चाहिए। भक्त भगवान को याद करते हैं ज़रूर वर्सा पाने। भगवान ही है पतित–पावन, सद्गति दाता, नर से नारायण बनाने वाला। और कोई बना ना सके। सतयुग में (फिर) से ल०ना० का राज्य होता है तो ज़रूर कहेंगे, अगले जन्म में पुरुषार्थ किया है। इसलिए बाप तुमको अब पुरुषार्थ कराय रहे हैं भविष्य में ऐसा पद पाने लिए। पतित दुनिया की अंत में ही आकर पावन बनावेंगे ना। वो है ही वाइसलेस वर्ल्ड। फिर कलाएँ कमती होती जाती हैं। अब फिर है विषियस वर्ल्ड। तो बाप कहते हैं, इन 5 विकारों का दान दो, पवित्र बनो। याद भी करो और पवित्र भी बनो। बी होली, बी योगी। गृहस्थ व्यवहार में रहते एक शिवबाबा को याद करो। और किसको याद किया तो व्यभिचारी बने। भक्तिमार्ग में गृहस्थ व्यवहार में रहते कब किसको, कब किसको याद करते हैं। तो वह व्यभिचारी याद हो जाती है और वह तो पवित्र भी नहीं रहते। अब बेहद का बाप कहते हैं, गृहस्थ व्यवहार में रहते मुझ एक बाप को याद करो। यह अन्तिम जन्म मेरे खातिर कमलफूल समान पवित्र बन सिर्फ मुझे याद करते रहो। यह एक जन्म मेरे मददगार बनो। जो मदद करेंगे वो ही फल पावेंगे। तुम हो गए ईश्वरीय खुदाई खिदमतगार। बाप भारत की खिदमत करते हैं ना। बाप कहते हैं– बच्चे, तुमको भी लायक बनना है। गुण भी ज़रूर चाहिए। यहाँ गुणवान बनना है। तो फिर 21 जन्म लिए तुम देवता बन राज्य करेंगे। बाबा ने समझाया है, कृष्ण का यह चित्र बड़ा अच्छा है– नर्क को लात मारते हैं, स्वर्ग हाथ में है। भारत में ही यह कायदा है, मनुष्य मरता है तो पहले उसका मुँह शहर तरफ, पैर श्मशान तरफ करते हैं, फिर जब श्मशान के नज़दीक आते हैं तो मुँह फिराय श्मशान तरफ करते हैं। अभी तो तुम जीते जी जाने की तैयारी कर रहे हो, तो तुम्हारा मुँह नई दुनिया तरफ होना चाहिए। सुखधाम जाना है वाया शान्तिधाम। यह है बेहद की बात। पुरानी दुनिया को लात मार रहे हैं, नई दुनिया में जा रहे हैं; इसलिए दुखधाम को भूलना पड़ता है। सुखधाम अर्थात् शान्तिधाम को याद करना है। दुखधाम में भल गृहस्थ व्यवहार में रहे पड़े हो; परन्तु याद उनको करो। अव्यभिचारी योग चाहिए। एक बाप दूसरा ना कोई। समझा(नी) तो बहुत अच्छी मिलती है। अर्जुन बहुत शास्त्र पढ़ा हुआ था तो उनको कहा, यह भूल जाओ और पढ़ाने वाले को भी भूल जाओ। बाप भी ऐसे कहते हैं, यह सुनते–2 तुम पतित बने हो। यह भी भक्तिमार्ग का पार्ट है। अभी जो कुछ सुना है वो भूलो। गुरुओं को भी छोड़ो। हम तुमको सभी शास्त्रों का सार सुनाते हैं, सच खण्ड का मालिक बनाते हैं। वो तुमको झूठ खण्ड का मालिक बनाते हैं। अब बाप कहते हैं, जज करो कि हम राइट है वा वो तुम्हारे चाचे–मामे अथवा शास्त्रवादी राइट हैं? वो लड़ाई है हद की, तुम्हारी है बेहद की, जिससे तुम बेहद की राजाई लेते हो। अब बाप कहते हैं, यह विकार दान में दे दो। अभी पुरुषार्थ ना करेंगे तो बहुत–2 पछतावेंगे; इसलिए गफलत छोड़ो, सर्विस में लग जाओ। कल्याणकारी बनो। यह है वैश्यालय। सतयुग को शिवालय कहा जाता है। जब तक वैश्यालय को ना छोड़ेंगे तो शिवालय में कैसे जाएँगे! यह कलियुग वैश्यालय है। इनमें महान दुख है। अभी तो अजन बहुत दुख के पहाड़ गिरने वाले हैं। फिर सुख के सोने के पहाड़ खड़े हो जावेंगे। अ(च्छा), मीठे–2 बच्चों प्रति मात–पिता, बाप–दादा का याद–प्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ